देवनागरी लिपि

भाषा और लिपि का पारस्पारिक संबंध बड़ा घनिष्ठ है। लिपि भाषा का शरीर या आवरण है। मानव ने भाषा द्वारा अपने विचारों को स्थायित्व अथवा प्रदान करने के लिए लिपि को जन्म दिया। लिपि का जन्म भाषा के जन्म के बहुत बाद में हुआ। प्रारंभिक लिपि चित्र लिपि थी अर्थात अपने भावों को चित्र या रेखा चित्र के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता था उदाहरण के लिए पेड़ के लिए पेड़ का चित्र मछली के लिए मछली का चित्र बना कर देते थे। चित्र लिपि से भाव लिपि का विकास हुआ इसमें चित्र न बनाकर वस्तुओं के लिए प्रतीकात्मक चिन्ह बनाने लगे। इसमें संबंध ध्वनि से हो गया।

भारत में प्राचीन लिपियां दो मिलती है- ब्राह्मी और खरोष्टि। इनमें ब्राह्मी से ही भारतीय लिपियों का जन्म हुआ। उत्तरी शैली से चौथी सदि में गुप्त लिपि तथा गुप्त लिपि से छठी सदि में कुटिल लिपि विकसित हुई। कुटिल लिपि से आठवीं, नौवीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ। जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं ।

नागरी नाम कैसे पड़ा इस बात पर विवाद है। विद्वानों ने दिए हुए मत इस प्रकार है--

1) गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा विशेष रुप से प्रचलित होने के कारण इसका नाम नागरी पड़ा।
2) प्रमुख रूप से नगरों में प्रचलित होने के कारण इसका नाम नागरी पड़ा।
3) कुछ लोगों के अनुसार 'ललित विस्तार' में उल्लेखित नाग लिपि नागरी है अर्थात नाग से नागर नाम का संबंध है।
4) तांत्रिक चिह्न 'देवनागर' से साम्य के कारण इसे 'देवनागरी' और फिर 'नागरी' कहा गया है।
5) देवनागर अर्थात काशी में प्रचार के कारण यह 'देवनागरी' कही गई।

नागरी लिपि का लगभग 1000 वर्षों का जीवनकाल है लगभग सभी अक्षरों में कमर एक मात्रा में परिवर्तन हुआ है और इस पर फारसी लिपि का प्रभाव है।

महत्व -- नागरी लिपि आक्षरिक एवं कई दृष्टिकोण से अपूर्ण होते हुए भी विश्व की अनेक लिपियों से बहुत अच्छी है। राष्ट्रभाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय लिपि के रूप में देवनागरी लिपि कई कारणों से स्वीकार्य है। शास्त्र उच्चारण और संकेत की दृष्टि से देवनागरी लिपि सबसे अधिक निर्दोष और परिपूर्ण है। संस्कृत, प्राकृत जैसी अभिजात भाषाओं के अध्ययन - अध्यापन के लिए देवनागरी लिपि के सिवा अन्य कोई चारा नहीं है।

1) नागरी लिपि की महत्ता अनेक कारणों से है सबसे प्रमुख बात यह है कि वह अत्यंत वैज्ञानिक होने के कारण अतीव उपादेय है। इस लिपि में किसी भी प्रकार के भ्रम की गुंजाइश नहीं है। जैसा कि रोमन लिपि में संभव है इस लिपि में 'जैसा लिखो वैसा पढ़ो' और 'जैसा पढ़ो वैसा लिखो' वाली बात है।
2) दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न प्रांतों के लोगों को एक दूसरे के अधिकतम निकट लाने के यदि हम धीरे-धीरे सभी प्रांतीय भाषाओं के लिए एक देवनागरी लिपि को अपना लेंगे तो हमें उन्नति के पथ पर अग्रेसर होने में बड़ी सुविधा हो जाएगी। लगभग सभी प्रांतीय लिपियां देवनागरी लिपि से ही निकली है अतः यह कार्य कठिन भी नहीं है।
3) इस लिपि में स्वर और व्यंजन के सैद्धांतिक संकेत वर्तमान है।।
4) उल्लेखनीय विशेषता इस लिपि में यह है कि उच्चारण अवयव 'अभ्यंतर प्रयत्न' और 'बाह्य प्रयत्नों' के सिद्धांतों पर स्वर एवं व्यंजनों का संपूर्णतः वैज्ञानिक वर्गीकरण किया गया है।
5) मात्राओं की दृष्टि से देवनागरी वर्णमाला पूर्ण है। इसमें ह्रस्व और दीर्घ का भेद स्पष्ट है।
6) सरलता, वैज्ञानिकता,सर्वाधिक प्रचार एवं स्वतंत्र भारत के आत्मसम्मान और गौरव की दृष्टि से देवनागरी ही राष्ट्रीय लिपि के रूप में ग्रहण की गई है।
7) संस्कृत के ग्रंथों के मुद्रण में देवनागरी का ही व्यापक प्रयोग होता रहा है।
8) हिंदी क्षेत्र के अतिरिक्त देवनागरी का प्रयोग मराठी और नेपाली के लिए भी होता है।
9) उत्तर भारत को प्रायः सभी लिपियां देवनागरी के ही रूप है और उनमें अत्यधिक साम्य है। इसलिए एक लिपि जानने वाला दूसरे लिपि को आसानी से पढ़ सकता है। इस दृष्टि से

By Dr. Sangita Chitrakoti

देवनागरी का भविष्य उज्जवल है। यदि भारत के समस्त लिपियों के स्थान में देवनागरी को अधिष्ठित किया जाय तो भाषा भेद को मिटाने में इससे बड़ी सहायता मिलेगी।

10) एक ध्वनि का एक ही संकेत हो। अर्थात ध्वनि और उसके संकेतमें निश्चितता हो। रोमन में एक ध्वनि के लिए अनेक संकेत काम में लाए जाते हैं -- जैसे -- **'क'** के लिए **'K'** (King, kid,Kite, key), **'C' (**Cat, Camel,Car,Cack), **'Q'** (quiz Queen,Quarantine, Quality), **'CK'** (Stick, Sock, Neck Lock), **'Ch'** (Chemical, Character, Technology, school)
इसी तरह रोमन में एक संकेत से अनेक ध्वनियां व्यक्त की जाती है।
उदाहरणार्थ -- 'व' से आठ ध्वनियों को अभिव्यक्त करने का काम किया जाता है --
जैसे -- Rat, Ball, Many, Fare, Mad, Was, Steward इत्यादि
कहने का तात्पर्य यह है कि एक से अनेक ध्वनियों की अभिव्यंजना और एक ध्वनि के लिए अनेक संकेतों का प्रयोग नीति संबंधी बहुत बड़ा दोष है। देवनागरी इससे मुक्त है।

11) किसी भाषा की सामग्रियों को अंकित करने की क्षमता भी लिपि में होनी चाहिए। आज संसार में जो लिपियां प्रचलित है उनमें यह गुण जितना देवनागरी में है उतना किसी दूसरी लिपि में नहीं। रोमन या उर्दू तो इस दृष्टि से बहुत ही हेय है। रोमन में ख,छ, ढ, थ, फ, घ, झ, ठ, भ आदि महाप्राण ध्वनिया अथवा ङ, त्र, ण आदि अनुनासिक ध्वनियों के लिए कोई संकेत नहीं है। यदि वाङमय शब्द लिखना हो तो उसे न रोमन में लिख सकते हैं ना उर्दू में।

12) लिपि सुपाठ्य और संदेह रहित है।

13) 'सौंदर्य' देवनागरी लिपि का महत्वपूर्ण गुण है।

14) आधुनिक वैज्ञानिक युग में यांत्रिक सौकर्य अर्थात मुद्रण और टंकण की सुविधा की दृष्टि से देवनागरी महत्वपूर्ण है।

देवनागरी लिपि में उपर्युक्त सभी विशेषताएं होने के कारण दूसरी किसी भी लिपि की तुलना में देवनागरी निसंदेह अधिक वैज्ञानिक तथा निर्दोष है।